हीगल का विश्वात्मा का विचार

हीगल के अनुसार इतिहास विश्वात्मा की अभिव्यक्ति की कहानी है तथा इतिहास में घटित होने वाली सभी घटनाओं का सम्बन्ध विश्वात्मा के निरन्तर विकास के विभिन्न चरणों से है। विश्वात्मा की अवधारणा एक आध्यात्मिक विचार है हीगल ने विश्व इतिहास की विभिन्न घटनाओं को एक विकासक्रम में जोड़कर विकास के अनवरत क्रम का निर्माण किया है।

विशुद्ध अद्वैतवादी विचारक हीगल सभी जड़ एवं चेतन वस्तुओं का उद्भव विश्वात्मा के रूप में देखता है वेदान्तियों के 'तत्वमसि:', 'अयमात्मा ब्रह्म' की भाँति हीगल की दार्शनिक मान्यता है "जो कुछ वास्तविक है वह बुद्धिगम्य है और जो कुछ बुद्धिगम्य है वह वास्तविक है।" (The Real is Rational and the Rational is Real)

हीगल के अनुसार, "विश्वात्मा के विकास का प्रत्येक सोपान अगले सोपान का बोध कराता है।" ये सोपान आन्तरिक तथा बाह्य जगत दोनों में पाए जाते हैं। आन्तरिक सोपान विचार जगत का बोध कराते हैं तथा बाह्य सोपान दृश्य जगत का। **हीगल** के अनुसार विश्वात्मा के विकास का प्रारम्भिक रूप भौतिक अथवा जड़ जगत है उसके बाद यह वनस्पतियों और प्राणियों में अभिव्यक्त होती है और इसी प्रकार इसका उच्चतम रूप मनुष्य रूप में प्रकट होता है मनुष्य की स्थिति सर्वोपरि होती है क्योंकि उसमें चेतन आत्मा रहती है।

विश्वात्मा का बाह्य विकास विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के रूप में होता है। सभी सामाजिक संस्थाओं का नियामक तथा रक्षक होने के नाते राज्य का स्थान सर्वोच्च है। यही कारण है कि हीगल राज्य को विश्वात्मा का पार्थिव स्वरूप अथवा पृथ्वी पर विद्यमान ईश्वर कहता है। विधि निर्माण, नैतिकता सभी

Scanned with CamScanner

कुछ राज्य के अन्तर्गत है और चूँकि राज्य स्वयं एक नैतिक संस्था है तथा उसका स्थान सर्वोपरि है इसलिए उसे साधारण नैतिकता के नियमों से नहीं बाँधा जा सकता। हीगल द्वारा प्रतिपादित विश्वात्मा शाश्वत् है एवं इसका विकास द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से निरन्तर होता रहता है। द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से विश्वात्मा के विकास को हीगल तीन क्रमों में विभाजित करता है। पहली स्थिति पूर्वी देशों की थी; दूसरी यूनानी और रोमन राज्यों की थी; तीसरी जर्मन राज्य के उत्थान की स्थिति होगी।

Scanned with CamScanner